

मन्त्रार्थ सर्वधर्मेभ्यो वा त्वा मधि मूचन ॥ न ना धर्म काय निष्ठादि रु न धर्म सं
ग काय मूत्या दयिं रुं स्व वज्र जा कि नो रि द्व ता रि श्वा त्मानं शा व ॥
उज उ वज्र स त्व मू व ना व सा मि द्वि म हं ॥ उद ७ इ का व ना य स म था म ह नि मि न
॥ उ व ४ वज्र स्टा ट यु अं ग न द द ध नं ॥ ॥ उ मू ४ मू ता स का या वज्र मू
लि म क मां ली य व इ ॥ न न्म धा व न्दु म पु ला का यं रा व य न ॥ हा ना द व द न ॥ य नः
रु इ य नि मू का ना दि व हे या नि नि या न्न य नि पु र्श्च व न्दु म पु लं रा व य न ॥ न न्म

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वज्रवज्रादत्त वीजवज्रादत्त विविक्त ॥ समस्त

० नमो कालं कुर्यात् ॥ ॐ वज्रशुद्धा सर्वधर्मा वज्रशुद्धादं ॥ वज्रादं ॥ ॐ
नमस्तु वज्रवज्रादि निषान्न सर्वथा गता विषयद निषार्य सर्वला कक्षा
षु सत्त्वार्थं कृत्वा युनः सज्जयन्ते वयवगाधं सत्त्वात्त जावं कुर्यात् ॥
॥ ॐ वलमानादं द्वापि निः ॥ सर्वलक्षणं संयुक्तं सत्त्वात्त कः ॐ यत्र न ॥ विमलं

षड्भुजं च वयनाघनं समश्नि ॥ विनयं द्वापि निः ॥ वज्रशुद्धा सर्वधर्मा वज्रशुद्धादं ॥ वज्रादं ॥ ॐ
ययं कवस्थान कपालमकृतादत्तं ॥ विनयं द्वापि निः ॥ वज्रशुद्धा सर्वधर्मा वज्रशुद्धादं ॥ वज्रादं ॥ ॐ
नं ॥ वज्रपयाध्वं वाधयथा गतं न कामुकं ॥ विजयता वयुनाथं वदथा ग
म्वयं विष्ट ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ वज्रशुद्धा सर्वधर्मा वज्रशुद्धादं ॥ वज्रादं ॥ ॐ
स्वाहा ॥ ॐ वज्रशुद्धा सर्वधर्मा वज्रशुद्धादं ॥ वज्रादं ॥ ॐ
॥ स्वदादं भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ वज्रशुद्धा सर्वधर्मा वज्रशुद्धादं ॥ वज्रादं ॥ ॐ

वनपवनथागनचक्रुदविमलिषकप्रार्थयन ॥ ॥ ॐ नमो भगवते ॥
 धनमकृतायागयाय ॥ ॥ ॐ दं नमो वृद्धानां यस्माकं पुत्रनाथः ॥
 यमकृटपथकृत्नाकृत्वा ॥ ॐ सर्ववृद्ध ४ वीरुमाणिमदामकृटपमिष्टुत्वादा
 ॥ कृत्पृटमकृटकृत्वा ॥ ॐ ४ थमावजं ॥ १ ॥ ॐ वज्रमथानि
 श्रीलिषिक ॥ ॐ सत्त्ववजि श्रीलिषिक ॥ २ ॥ ॐ वज्रवजि श्री
 लिषिक ॥ ३ ॥ ॐ धर्मवजि श्रीलिषिक ॥ ४ ॥ ॐ धर्मवजि

श्रीलिषिक ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ उदकमकृटवज्र ४ ममकृत्वा
 योरुवरुत्वा ॥ ॥ श्रीकर्मण पाशादि पृथग्याम ॥ ॐ श्रीवज्र
 वज्राय स्वादा ॥ ॐ श्रीशायय स्वादा ॥ ॐ वज्रमंरुवाय स्वादा ॥ ॐ श्रीमिता
 य स्वादा ॥ ॐ श्रीमाद्यमिदिय स्वादा ॥ ॐ वाचय स्वादा ॥ सामकिय स्वादा ॥
 पाथुवाय स्वादा ॥ ॐ श्रीर्यामात्राय स्वादा ॥ ॥ यक्षपदात्रपुत्रात्तास्या
 मुक्ति ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वृद्धानां कृत्वादि कृत्वा लयेवमथवेवाच

॥ अनाथ यव ॥ ॥ उदय गिलम कूट वा मिम सि लि ॥
 वयसयुगं गतिमानि वदुषी ठिकं ॥ भगवत ददधव या विदुषु ल ॥
 युक्ता गत यत्नमग सादिय वज्र लप वम युव ॥
 सुलया नाम मूलमल जाययाय ॥ धूप आकर्षण या गति युष्मा ॥
 धूपयाय वा ॥ ॥ उरुगवन श्रीमन् ॥
 दवी रुद्रावकायु आगधन विद्याया जान ॥ ॥ मिष्टा मिष्ट मदान ॥

गभयानि ॥ वा रुद्रावकाय नवयोवन सयन्ता ॥
 गभयानि ॥ वा रुद्रावकाय नवयोवन सयन्ता ॥
 गभयानि ॥ वा रुद्रावकाय नवयोवन सयन्ता ॥
 गभयानि ॥ वा रुद्रावकाय नवयोवन सयन्ता ॥
 गभयानि ॥ वा रुद्रावकाय नवयोवन सयन्ता ॥

ASHA ARCHIVES 3732

[illegible]

दयम्भुजं च न च नुममलं ... का च न वरु ...

न नाना ... ता क ... वारे ...

क सरे मत्वा म की कृत्वा पुन ... हवनी ...

का कृत्वा ... ता ...

... ता ...

... ता ...

... ता ...

... ता ...

... ता ...

... ता ...

... ता ...

... ता ...

अहोकीला ॥ ३३ ॥ अहोकीला ॥ ३३ ॥ अहोकीला ॥ ३३ ॥

अहोकीला ॥ ३३ ॥ अहोकीला ॥ ३३ ॥ अहोकीला ॥ ३३ ॥

अहोकीला ॥ ३३ ॥ अहोकीला ॥ ३३ ॥ अहोकीला ॥ ३३ ॥

अहोकीला ॥ ३३ ॥ अहोकीला ॥ ३३ ॥ अहोकीला ॥ ३३ ॥

अहोकीला ॥ ३३ ॥ अहोकीला ॥ ३३ ॥ अहोकीला ॥ ३३ ॥

अहोकीला ॥ ३३ ॥ अहोकीला ॥ ३३ ॥ अहोकीला ॥ ३३ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
कक मल्लो विविधसुखं सुखं को वा निश्चयतः यमदिवसं को य
यम् ॥ कवत्तक ॥ ३ मदनिवज्रहववज्रव ॥ सर्वपाप
विषा वाकन मायापद विरुद सुमनसा सुत्रादीयत्ययमा
नः यम् ॥ ॥ इति हसवापदवसानिके केशव ॥ ३ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अमदिनायका सर्वमन्त्रसमग्रशोभता सहदिश्वरवकाया
वीर्यविभामन उल्लेखनीयसुखं सुखं ॥ ३ ॥ गानकलाकवत्त
रिक्तसर्वदवागच्छा नत्य व वामीन ॥ ३ ॥ नागरुवनांगग
मन्त्र ॥ ३ ॥ गानरुवनांगग ॥ ३ ॥ गानरुवनांगग ॥ ३ ॥
॥ ३ ॥ गानरुवनांगग ॥ ३ ॥ गानरुवनांगग ॥ ३ ॥

पंचपचावपुत्रा॥ वासा मुनि ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
 श्रुत्य नववदारीमान लघुविन्दुनिवासिनी शुभमाकवृक्षात्मानं उवाच क
 स्वमावक ॥ कलत्क न्याग्निमजीनसमवजयागिनी ॥ ॥ धनसमयः
 मरु यधर्मा ॥ अष्टगन्ध ॐ न्यादि ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॥ ६ गालि
 दवपुत्रा ॥ यमदवपुत्र ॥ यमयास्वपुत्र ॥ यमयाय ॥ जायधृप ॥ नयजन
 आकष ॥ पाशादिपुत्रा न्यास ॥ पूजा वासा मुनि ॥ मरु ॥ ॥ धनः

निव वात्रगुलाधिलकं पूजायावक ॥ यमजजमका स्नान दायक स्वस्ति
 वाक्कपत्रया धनलि समय मरु यधर्मा गाथा ॥ अष्टगन्ध ॐ न्यादि ॥ ॥
 ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ धनलि व वाक्कपुजायावक ॥ दगुलि वलि विय ॥ वाक्क ॥
 ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ रुद्रावक गुनां वा वयम ॥ ॐ यंका वल वायुमपुलं न
 स्थापयिद्रुका वरु यमं जाक वृत्रिका यमी आका व सं जाक वृदस्थ साजन
 ॥ मरु रुद्रादि कं यात्रि पूत्रि ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥

दधिष्ठितं पञ्चमस्य पञ्चपदीपत्रयनिष्ठाद्य-वामाङ्गुलीनाम्ने मायावे
लिनं नामाङ्गादिकं सारिन्नवर्णानुवर्णदृष्ट्वा मर्त्यवाक्यतयवगम ॥ आ
कर्षणपाशादिपूषात्मा ॥ उं स्वच्छन्दरुद्रवायनमस्वाहा ॥ उं श्रीगंगा
रुद्रवायनमस्वाहा ॥ उं नृपुत्ररुद्रवायनमस्वाहा ॥ उं वल्लभरुद्रवायनमस्वा
हा ॥ उं काठरुद्रवायनमस्वाहा ॥ उं उत्तमरुद्रवायनमस्वाहा ॥ उं क
यावरुद्रवायनमस्वाहा ॥ उं लिखारुद्रवायनमस्वाहा ॥ उं मंदाररुद्र

वायनमस्वाहा ॥ उं रुद्रवल्गुकायनमस्वाहा ॥ उं वक्रायणीयस्वाहा ॥ उं
मादयणीयस्वाहा ॥ उं कामाणीयस्वाहा ॥ उं विष्णुवीथस्वाहा ॥ उं वागादियस्वा
हा ॥ उं वृन्दायणीयस्वाहा ॥ उं वामाङ्गायस्वाहा ॥ उं महालक्ष्मीयस्वाहा ॥ उं मि
थिनीयस्वाहा ॥ उं वाग्निनीयस्वाहा ॥ उं कृष्णालायस्वाहा ॥ उं वरुणपञ्चमी
वृद्धस्वाहा ॥ पूजा लासा मुक्ति ॥ उं श्रीगंगावृत्रघ्नवृत्रार्थकाधरुद्रवत्तम
रुद्रवत्तमवत्तमकपालरीषधसुधासंदायवत्तम श्रीरुद्ररुद्रवायनमस्वाहा ॥

[illegible]

न कत्रसं वक्राथ ॥ गुलपागालवक्राय ॥ वाक्त्रवाले विनायक अभवकल
या ॥ ॥ ॐ मि सं क्र य यु नू म गु ल त्रि स मा धि क ल भ ज्ञ ष वि श षी
थ य वा च ष वि धि स मा य ॥ ॥ थ यालि व क र्म स व नू य ष ग स च क
या य इ ला ॥ ॥ गुरु ॥ ॥ ॐ
१८ न मा गी श्वा र्या व ला कि रु थ वा य ॥ वा धि स त्वा य म दा स त्वा य म दा
का व र्ति का य ॥ रु थ थ ॥ ८ न मा गी ला क नो थ य ३ ला क व ल ला क